एथनॉल ब्लेंडिंग से पेट्रोल सस्ता होगा: शुगर मिल्स

मिलों ने ब्लेंडिंग से पेट्रोल महंगा होने का ऑयल कंपनियों का दावा खारिज किया

[श्रेया जय *नई दिल्ली*]

चीनी मिलों ने ऑयल कंपनियों की यह दलील खारिज कर दी है कि एथनॉल मिलाने से पेट्रोल की रीटेल कीमत बढ़ेगी। उन्होंने कहा है कि ऐसा करने से सरकारी ऑयल कंपनियां पेट्रोल पर 6 रुपए प्रति लीटर की बचत कर सकेंगी।

इंडियन शुगर मिल्स एसोएिशन (इस्मा) ने पेट्रोलियम मिनिस्ट्री को लिखे लेटर में कहा है कि ऑयल कंपनियां डोमेस्टिक प्रोड्यूसर्स से एथनॉल खरीदना नहीं चाहतीं, जबकि इंडियन शुगर मिल्स उनकी सालाना रिक्वायरमेंट का 53 फीसदी पूरा करने में सक्षम हैं। हाल में ऑयल कंपनियों ने कहा था कि वे डोमेस्टिक सोर्सेज से अपनी जरूरत का एक-तिहाई से भी कम एथनॉल हासिल कर पाएंगी। उन्हें ज्यादातर जरूरत के लिए महंगे इंपोर्ट पर निर्भर रहना होगा। ऑयल कंपनियों ने महंगे आयातित एथनॉल मिलाने से पेट्रोल के दाम बढ़ने की भी आशंका जताई थी। इकनॉमिक टाइम्स ने इस लेटर को देखा है। इसमें कहा गया है, 'अनिवार्य 5 फीसदी एथनॉल ब्लेंडिंग के लिए सालाना 105 करोड़ लीटर की जरूरत के मुकाबले एथनॉल मैन्युफैक्चरर्स ने टेंडर में 55 करोड़ लीटर का ऑफर दिया था। हालांकि, 4 महीने बीत जाने के बाद भी ऑयल मार्केटिंग कंपनियों की ओर से सिर्फ करीब 25 करोड़ लीटर्स के ऑर्डर जारी किए गए हैं।'

मिलों की दलील है कि एथनॉल मिलाने से कंपनियां पेट्रोल पर 6 रुपए लीटर की बचत कर सकेंगी

शुगर मिलों का कहना है कि अगर सप्लीमेंटरी टेंडर जारी किया जाता है, तो वे 55 करोड़ लीटर या इससे भी ज्यादा एथनॉल की सप्लाई करने को तैयार हैं, क्योंकि इस सीजन में शुगरकेन की पेराई अक्टूबर में शुरू होगी। इस्मा ने इस सीजन में 50 करोड़ लीटर एथनॉल के प्रोडक्शन का अनुमान जताया है। लेटर में कहा गया है, 'ध्यान देने वाली बात यह है कि डोमेस्टिक सोर्सेज से सालाना रिक्वायरमेंट का 53 फीसदी पूरा होने से ऑयल मार्केटिंग कंपनियां करीब 6 रुपए प्रति लीटर की बचत कर सकेंगी। इसके अलावा अक्टूबर-नवंबर 2013 से एडिशनल सप्लाई के सप्लीमेंटरी डोमेस्टिक टेंडर से आयॅल मार्केटिंग कंपनियों की बाकी रिक्वायरमेंट भी पूरी की जा सकती है।'

ऑयल कंपनियों द्वारा किए गए टेंडर में डोमेस्टिक प्रोड्यूसर्स ने 38-49 रुपए प्रति लीटर पर एथनॉल बेचने की पेशकश की है। सरकारी सूत्रों का कहना है कि कम मात्रा में प्रोक्योर करने की वजह यह है कि एथनॉल प्रोड्यूसर्स द्वारा ऑफर की गई कीमत ऑयल कंपनियों के लिए बहुत ज्यादा थी। पिछले महीने सरकारी ऑयल कंपनियों ने 42 रुपए लीटर के रेट पर 10 करोड़ लीटर एथनॉल खरीदा था। इंपोर्टेड एथनॉल की कीमत करीब 70-90 रुपए प्रति लीटर है। शुगर मिलों ने सरकार से बड़ा हिस्सा डोमेस्टिक सोर्सेज से प्रोक्योर करने की गुजारिश की है। बाकी हिस्सा ही उन्हें इंपोर्ट के जरिए हासिल करना होगा। इस मसले पर अंतिम फैसला लेने के लिए सरकार ने नोट बांटा है, क्योंकि इस मसले पर शुगर मिलों और कंपनियों की राय अलग हैं।

इकनॉमिक टाइम्स

6/6/13